© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 11 | October – December 2017

'प्रेमचंद के उपन्यासों में सामाजिक मूल्य'

सुमन बाला

मुंषी प्रेमचंद जी हिन्दी युगप्रवर्तक माने ज ाते है उनके सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास साहित्य की सबसे समृद्ध धरोहर है। प्रेमचंद जी को साहित्यकारों ने 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि से विभूषित किया था। उपन्यास का अर्थ अध्यायों या प्रकरणों में लिखी हुई ऐसी कल्पित और बड़ी आख्यायिका जिसमें अनेक पात्र विस्तृत व सुसम्बद्ध घटनाएं हो। उपन्यास को गुजराती में ' नवल कथा' मराठी में 'कादम्बरी' और बांग्ला में 'नावेल' कहते है।

साहित्यक रचनाओं में सामाजिक मूल्यों का विषेष महत्व हैं इन मूल्यों के अनुसार चलना व इन्हें निभाना भी एक चुनौती भरा कार्य है। समाज से सम्बन्ध रखने वाला सामाजिक होता है। सामाजिक दो शब्दों के योग से बनता है समाज+इक। इसका अर्थ है– ''समाज से जड़ा हुआ''

हम जब भी समाज में परिवर्तन चाहते है तो हमारे सामाजिक मूल्य हमारे मार्ग में बाधा उत्पन्न करते है तब ऐसे समय में हमारा सामाजिक वातावरण व हमारे मूल्यों में संघर्ष सा पैदा होने लगता है। समय में प्रत्येक साहित्यकार समाज के संघर्ष, परिस्थितियों दृष्टिकोण व विसंगतियों को अपने साहित्य में उकेरता है।

साहित्य समाज का दपर्ण होता है अर्थात् जैसा काल, समाज, धार्मिक व राजनीतिक वातावरण होगा, उसी प्रकार का साहित्य सृजन होता है। किसी भी काल का साहित्य वहॉ की हर परिस्थितियों व मूल्यों को अपने अंदर उतार कर एक आईने का काम करता है।

हिन्दी उपन्यास के विकास क्रम का अध्ययन करने के लिए हम 'उपयन्यास सम्राट' प्रेमचंद को केन्द्र बिन्दु मान ले तो इसे तीन चरणों में विभक्त कर सकते है।

- प्रेमचंद पूर्व हिन्दी उपन्यास
- प्रेमचंद कालीन हिन्दी उपन्यास
- प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास

प्रेमचंद पूर्व साहित्यकारों ने तिलस्मी और ऐयारी पूर्वक उपन्यास लिखकर समाज की पूर्णतः मनोरंजन किया। परन्तु मंषी प्रेमचंद जी सर्वप्रथम ऐसे उपन्यासकार थे जिन्होंने उपन्यास साहित्य को तिलस्मी और ऐयारी से बाहर निकालकर उसे ऐसे वास्तविक भूमि पर ला खड़ा किया। उन्होंने अपनी रचनाओं में जनसाधारण की भावनाओं, परिस्थितियों ओर उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया है उनकी कृतियॉ भारत के सर्वाधिक विषाल ओर विस्तृत वर्ग की कृतियॉ है।

प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों में सामाजिक मूल्यों की जड़ता, रुढ़ता, नैतिकता, असमानता, छुआछूत की समस्या, भ्रष्टाचार, राष्ट्रीय आंदोलन, कृषक समस्या, मानवता, भारतीय संस्कृति, शोषण विधवा विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा आदि विविध विषयों को अपने उपन्यासों का विषय बनाया है।

एक सदी बीत जाने के बाद भी उनके उपन्यास आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य के माध्यम से जिन समस्याओं व मूल्यों का चित्रण किया है। आज भी हम उन्हें उभारने का प्रयत्न कर रहे है। उनके उपन्यास गोदान के मुख्य पात्र 'होरी' व 'धनिया' आज भी गॉव के हर किसान के रुप में मौजूद है तथा उनकी स्थिति आज भी समाज में वैसी ही बनी हुई

है। समाज के दलित वर्ग आर्थिक और सामाजिक मंत्रणा के षिकार मानव ही उनके उपन्यासों के मुख्य पात्र बने हें प्रेमचंद जी के उपन्यास सामाजिक बोध कराने के साथ हमारी अंतरात्मा को जगाने वाले है उन्होंने किसानों के दर्द को बेबाकी से चित्रण किया है। उन्होंने आम जन–जीवन की पीड़ा को सभी तक पहुंचाया है। सन् 1918 से लेकर 1936 तक अर्थात् सेवासदन के प्रकाषन काल से लेकर 'गोदान' के प्रकाषन काल तक की अवधि को हिन्दी उपन्यास के इतिहास में प्रेमचंद युग से जाना जाता हैं 1936 ई0 में प्रगतिषील लेखक संघ की बैठक में मुषी प्रेमचंद ने कहा कि–साहित्य केवल मनोरंजन एवं विलासिता की वस्तु नहीं है। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें चित्रण की स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाई का प्रकाष है, जो हममें गति, संघर्ष ओर बैचनी पैदा करे, सुलावे नहीं।

प्रेमचंद ने लिखा है ''मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र मानता हूँ, मानव चरित्र पर प्रकाष डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है।

प्रेमचंद के प्रत्येक उपन्यास में सामाजिकता व आदर्ष का फुट रहा है। इनके उपन्यासों में आदर्ष के साथ–साथ यथार्थ का भाव हैं प्रेमचंद के उपन्यासों में सेवासदन, प्रेमाश्रय, रंगभूमि, निर्मला, गबन व गोदान आदि में उनका आदर्षोन्मुखी यथार्थवादी स्वरुप ही सामने आया है उन्होंने यथार्थ को कल्पना से संवार कर इस रुप में प्रस्तुत किया जिससे वह रोचक मनोरंजक एवं षिक्षाप्रद बन सके। प्रेमचंद जी ने समाज में व्याप्त छुआछूत एवं साम्प्रदायिकता की समस्या को उन्होंने उपन्यासों में अभिव्यक्ति दी। उन्होंने दुर्बलता व आडम्बरों में पिसती नारी की पीड़ा को भी अपनी रचनाओं के माध्यम से उजागर किया है।

प्रेमचंद का प्रथम उपन्यास 'सेवासदन' (1918) प्रकाषित हुआ। सेवासदन उपन्यास का उर्दू शीर्षक 'बाजार–ए–हुसन था। इस समपूर्ण उपन्यास में नैतिक मूल्यों एवं मर्यादाओं का पालन किया गया है। नर–नारी सम्बन्धों में अपनी रोचक कथावस्तु एवं जिज्ञासावृति के कारण भी लोकप्रिय हुआ है। प्रेमचंद जी के उर्दू उपन्यास 'चौगाने हस्ती' का हिन्दी अनुवाद 'रंगभूमि' को भारतीय जनजीवन का रंगमंच कहा गया है। रंगभूमि उपन्यास के नायक सूरदास के माध्यम से प्रेमचंद जी ने औद्योगिक और कृषि जीवन की तुलना, पूँजी केन्द्रीयकरण का विरोध, औद्योगिक सभ्यता का विरोध, मानव अधिकारों की सुरक्षा, राष्ट्रीय स्वतंत्राय के लिए जन–आंदोलन का समर्थन, अंग्रेजी साम्राज्यवाद की नकली और थोथी आदर्षवादिता इत्यादि का यथार्थ चित्रण हुआ है।

प्रेमचंद ने 'कर्मभूमि' उपन्यास के माध्यम से गरीब शहरी ग्रामीण जनता का यर्थाथ चित्रण किया है व उनके प्रति पाठकों की सहानुभूति जाग्रत की है। 'कर्मभूमि' उपन्यास में मंदिर में अछूतों का प्रवेष निषेध, मंहतों का आडम्बर और जनता का अंधविष्वास, मदिरा सेवन आदि सामाजिक और धार्मिक समस्याओं के साथ ही मजदूरों, किसानों की दुर्दषों आदि राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं को उठाया गया है। 'निर्मला' उपन्यास के माध्यम से भी समाज में फैली दहेज प्रथा अनमेल विवाह की समस्या को चित्रित किया है।

प्रेमचंद जी द्वारा रचित गोदान (1936) कृषक जीवन का महाकाव्य है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने 'होरी' की व्यथा–कथा के माध्यम से कृषक वर्ग के शोषण का यथार्थ चित्र अंकित किया है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यास में पात्रों की योजना करते समय मानव–मूल्यों को सदैव ध्यान में रखा है। प्रेमचंद के उपन्यास के पात्र वास्तव में किसी व्यक्ति विषेष को नहीं अपितु पूरे समाज, समूह वर्ग, व्यवस्था, परम्परा को दर्षाते हैं इन पात्रों में सजीवता प्रभावषीलता एवं सषक्तता है तथा वे अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र हैं 'होरी' कृषक वर्ग का प्रतिनिधि पात्र है उसके जीवन की ट्रैजडी हर किसान के जीवन को प्रस्तुत करती है जब भारत में ज़मीदार प्रथा थी तो किसान उसके षिकंजे में कसा हुआ था। जमीदार, पटवारी, सूदखोर महाजन, पुलिस, व्यापारी, धर्म के ठेकेदार भी उसका शोषण करते है। शहर के मेहता और होरी के पुत्र गोबर जैसे लोग ही इस शोषण के विरुद्ध आवाज उठाकर समाज को इस अभिषाप से मुक्ति दिला सकते है। गोदान में प्रेमचंद जी ने पूँजीवादी व्यवस्था को समाप्त करने

का संकल्प किया था। खन्ना पूंजीपतियों के प्रतिनिधि पात्र है। प्रेमचंद जी मानते थे कि नारी योगदान बिना सामाजिक क्रान्ति असम्भव है। उन्होंने 'गोदान' में 'धनिया' के रुप में एक ऐसी नारी पात्र की कल्पना की जो अपनी दृढ़ता साहस और कर्मठता से समाज को हिला देती है वह एक साथ सामाजिक रुढ़ियों से अन्याय व शोषण से जूझती है ओर अपने लौह व्यकितत्व पर आन्तिरक मृदुता के कारण गोदान की सर्वाधिक जीवन्त नारी पात्र बन जाती है।

प्रेमचंद जी का सारा साहित्य मुख्य रुप से किसान व मजदूर वर्ग को केन्द्र में रखकर लिखा गया है इनके उपन्यासों का प्रत्येक पात्र अपने अस्तित्व हेतु संघर्षरत है इन्होंने पूंजीवाद, लूट, शोषण ओर झूठ के विरुद्ध सामाजिक परिवर्तन की मुहिम को आगे बनाया है।

प्रेमचंद ऐसे प्रथम भारतीय उपन्यासकार जिन्होंने उपन्यासें का उपयोग समाज ओर जीवन की आलोचना के लिए किया है उन्होंने अपने उपन्यासों में उन समस्याओं को चित्रित किया है जो वर्तमान युग से जुड़ी हुई है व जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति अनुभव करता है। प्रेमचंद एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जहॉ भेदभाव के अभिषाप से मानवता पीडित न हो किसी प्रकार का शोषण न हो व आदमी की पहचान सम्पति ओर जाति के पैमाने से न हो। 'गोदान' उपन्यास का प्रमुख उद्देष्य कृषक जीवन की समस्याओं का चित्रण करना, उसके शोषण का चित्र प्रस्तुत करना ओर दीन–हीन स्थिति से समाज को परीचित कराना। किसान का शोषण कौन करता है तथा उसका शोषण कितने मुहानों पर होता है और उस शोषण के लिए समाज के कौन–कौन लोग उतरदायी है– इसका सजीव चित्रण गोदान में किया गया है।

भारतीय मानव सामाजिक मूल्यों से बंधा रहता है। इन्हीं मूल्यों के बंधन में फंसे रहने के कारण वह संकटो से घिर जाता है। ये मूल्य अमीर व्यक्ति के लिए खास महत्व नहीं रखते परन्तु गरीब, मजदूर व किसान के गले की फांस बन जाते है। इन सामाजिक मूल्यों की त्रासदी में भारतीय किसान व उसका सारा परिवार भी पिस रहा होता है। इस प्रकार की विसंगितयों व अन्याय की पहचान प्रेमचंद जी ने की ओ इनको अपने साहित्य में सहज भाव से चित्रित किया। प्रेमचंद जी ने महसूस किया कि साहूकार, पूँजीपति वर्ग अपने मनमाने व्यवहार करते है ओर भारतीय किसान उपेक्षित बनकर पीड़ा से मुक्ति के लिए तड़पता है।

प्रेमचंद जी ने संगठित समाज की परिकल्पना की व उनका मत है कि शोषण का विरोध संगठित होकर ही किया जा सकता है। अपने सभी उपन्यासों में उन्होंने यह संदेष दिया कि संगठित होकर संघर्ष करने से व्यक्ति और समाज की स्थिति बदलती है। दलित शोषित वर्ग अपने बीच में से ही अपना नेता पैदा करे और संगठित होकर अपने उद्वार का मार्ग प्रषस्त करे। प्रत्येक व्यक्ति को और प्रत्येक समाज को अपना संघर्ष स्वयं करना होता है तुच्छ स्वार्थो के वषीभूत होकर कुछ लोग समाज की एकता को भंग करना चाहते है इस प्रवृति पर अंकुष लगाना होगा। गोदान के माध्यम से प्रेमचंद जी ने कृषक जीवन से जुड़ी समस्याओं का निरुपण करने के साथ–साथ उन्होंने समाज की अन्य समस्याओं पर भी विहंगम दृष्टि डाली है निष्चित रुप से ही मुँषी प्रेमचंद जी का गोदान उपन्यास भारतीय ग्रामीण जीवन का दर्पण कहा जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:–

प्रेमचंद– गोदान उपन्यास

प्रेमचंद– सेवासदन उपन्यास

प्रेमचंद– कर्मभूमि

प्रतियोगिता साहित्य सीरिज– पेज ने0 99, 101, 102

उपकार– (यू.जी.सी. नेट)

इन्टरनेट